ईवी दोपहिया का निर्यात हब बन सकता है भारत

चीन की कंपनियों का जोर कार बाजार पर, जापान के पास तकनीक लेकिन विस्तार को तैयार नहीं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: दक्षिण अमेरिकी देशों से लेकर दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के बाजार में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की मांग बढ़ रही है, लेकिन इनकी आपूर्ति करने वाली कंपनियों की कमी है। इलेक्ट्रिक वाहन क्षेत्र में चीन की कंपनियों की रुचि घरेलू कार बाजार पर ज्यादा है। जापान की कंपनियों के पास प्रौद्योगिकी है लेकिन वे विस्तार को तैयार नहीं हैं। ऐसे में भारतीय दोपहिया कंपनियों के पास अवसर है कि वह इस स्थिति का फायदा उठाकर वैश्विक दोपहिया ईवी की प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन सकती हैं। भारतीय कंपनियों ने पिछले वित्त वर्ष कुछ सौ दोपिहया वाहनों का ही निर्यात किया है, लेकिन अनुमान है कि वर्ष 2030 तक भारत से 10 लाख से ज्यादा दोपिहया वाहनों का निर्यात हो सकता है।

पिछले दिनों नीति आयोग और भारी उद्योग व लोक उपक्रम मंत्रालय की अगुआई में ईवी क्षेत्र में वैश्विक आपूर्ति में संभावनाओं पर एक बैठक हुई। बैठक में शामिल उद्योग जगत के कुछ लोगों ने दैनिक जागरण को बताया कि अगर कार बनाने वाली कुछ दिग्गज वैश्विक कंपनियां भारतीय बाजार में उतरने की तैयारी में हैं तो दोपहिया बाजार में भारतीय कंपनियों की भी जबरदस्त मांग बढ़ने की सूरत बन रही है। अभी तक जो सूचना सामने आई है उसके मुताबिक पिछले छह महीनों में चीन की इलेक्ट्रिक वाहन कंपनियों ने दोपिहया वाहनों के निर्यात पर ब्रेक लगाना शुरू कर दिया है। वजह यह है कि उनके घरेलू बाजार में इलेक्ट्रिक कारों की मांग ज्यादा है। भारत के लिए शुभ संकेत यह है कि दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के जिन बाजारों में ईवी दोपहिया की मांग है वहां भारत की पेट्रोल चालित वाहनों की पहले से ही काफी अच्छी साख है। बजाज आटो, टीवीएस व हीरो के स्कूटर व मोटरसाइकिल इन बाजारों में चीन की दोपहिया कंपनियों को पहले ही बाहर कर चुकी हैं।

- दक्षिण अमेरिका से लेकर दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के बाजार में इलेक्ट्रिक दोपहिया की बढ़ रही मांग
- ओला, हीरो, एथर, टीवीएस और बजाज आटो जैसी कंपनियां इन बाजारों में प्रवेश की कर रही हैं तैयारी

10 लाख से ज्यादा दोपिहया वाहनों का निर्यात हो सकता है 2030 तक

7.28 लाख दोपहिया वाहनों की बिक्री हुई वर्ष 2023-24 में

नीति आयोग ने कहा, कंपनियों को मौजूदा निर्माण क्षमता का करना होगा विस्तार

कुछ महीने पहले देश की एक प्रमुख दोपहिया वाहन कंपनी एथर एनर्जी ने नेपाल के बाजार में प्रवेश किया है। नीति आयोग ने भारतीय कंपनियों से कहा है कि विदेशी बाजार में उपलब्ध संभावनाओं का फायदा उठाने के लिए उन्हें अपनी मौजूदा निर्माण क्षमता का विस्तार करना होगा। अभी भारतीय बाजार में ही काफी ज्यादा मांग होने की संभावना है। वर्ष 2019-20 में भारत में सिर्फ 28 हजार इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री हुई थी, जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 7 .28 लाख हो गई। चालू वित्त वर्ष के दौरान बिक्री में तीन गुणा वृद्धि की संभावना जताई गई है। ऐसे में भारतीय कंपनियों जैसे एथर, ओला इलेक्ट्रिक, हीरो इलेक्ट्रिक, ओकीनावा आटोटेक, बजाज आटो आदि को अपनी क्षमता में भारी विस्तार करना होगा। लेकिन इसके साथ ही इन्हें विदेशी बाजार को लेकर भी नीति सामने लानी होगी।

अपनी ईवी की लागत घटाने में जुटीं हुंडई और किआ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: दो बड़ी कार कंपनियां हुंडई और किआ ने फैसला किया है कि वह भारत निर्मित बैट्रियों का इस्तेमाल ही भारतीय बाजार में बेचे जाने वाली इलेक्ट्रिक कारों में करेंगी। सोमवार को दोनों कंपनियों इसके लिए एक्साइड एनर्जी साल्यूशंस के साथ करार किया। दोनों कंपनियों की महत्वाकांक्षी कारें वर्ष 2024-25 में लांच होनी हैं। हुंडई मोटर के प्रेसिडेंट हुई वोन यांग का कहना है, 'एक्साइड के साथ समझौता होने से हुंडई व किआ को दूसरी कंपनियों के समक्ष प्रतिस्पर्द्धी होने में मदद मिलेगी।'